

पद २५३

(राग: बिहाग - ताल: त्रिताल)

ऐसे गरिबनवाज प्रभुजी ।।ध्रु.।। संकट पडे तब सुमरन कीनो । उधार
लियो गजराज ।।१।। द्रुपदसुता की लज्जा राखी । लाखन चीर
बढाय महाराज ।।२।। मानिक के प्रभु दीनदयाल । शरन आय की
लाज ।।३।।